2022

1st Semester Examination

HINDI

Paper : HIN - 102

[मध्यकालीन काव्य]

Full Marks : 40 Time : 2 Hours

The figures in the margin indicate full marks.
Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2×10=20

   (क) कबीरदास की रहस्य-भावना पर प्रकाश डालिए।

   (ख) 'तुलसीदास के काव्य में लोकमंगल की भावना है।' सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

   (ग) सूरदास की विरह-भावना पर विचार कीजिए।

   (घ) 'घनानंद प्रेम-पीर के गायक हैं' — इस कथन की समीक्षा कीजिए।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** का यथानिर्देश उत्तर दीजिए : 5×4=20

   (क) "गोकुल सबै गोपाल उपासी
   जोग-अंग साधत जे उधो ते सब बसत ईसपुर कासी।

P.T.O.

यद्यपि हरि हम तजि अनाथ करि तदपि रहति चरननि रसरासी ॥
अपनी सीतलताहिं न छाँड़त यद्यपि हैं ससि राहु-गरासी ।
का अपराध जोग लिखि पठवत प्रेम भजन तजि करत उदासी ।"

— सप्रसंग व्याख्या कीजिए ।

(ख) "तन रति करि मैं मन रत करि हूं, पंचतत्व बाराती ।
रामदेव मोरै पांहुनै आये, मैं जोबन मैंमाती ॥
सरीर सरोवय बेदी करि हूं, ब्रह्मा वेद उचार ।
रामदेव संग भांवरि लैहुं, धनि धनि भाग हमार ॥"

— भावार्थ लिखिए ।

(ग) "अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा । सब सुन्दर सब बिरूज सरीरा
नहीं दरिद्र कोउ दुखी न दीना । नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना । सब निर्दंभ धर्मरत पुनी । नर अरू नारि चतुर सब गुनी ।
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी । सब कृतग्य नहिं कपट सयानी ।"

— ससंदर्भ व्याख्या कीजिए ।

(घ) "हीन भए जल मीन अधीन कहा मो कहु अकुलानि समानै ।
नीर सनेही को लाय कलंक निरास ह्वै कायर त्यागत प्राने ॥
प्रीति की रीति सु क्यों समुझै जड़ मीत के पानि परे को प्रमाने
या मन की जु दसा घनआँनद जीव की जीवनि जान ही जानै ।"

— भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए ।

(ङ) विद्यापति की शृंगारिक-भावना को संक्षेप में लिखिए ।

(च) जायसी की विरह-भावना पर संक्षेप में प्रकाश डालिए ।